International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(3): 215-219

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(3): 215-219
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 05-03-2023
Accepted: 09-04-2023

मयूरी झा
पी.एच.डी., शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
मयूरी झा
पी.एच.डी., शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

रामायण एवं महाभारत में तीर्थों की अवधारणा

मयूरी झा

सारांश
संस्कृत वाङ्गमय का प्रादुर्भाव वेद से हुआ, वेदों के पश्चात् लौकिक संस्कृत के दो अमूल्यरत्न रामायण एवं महाभारत की रचना की गई। रामायण एवं महाभारत दोनों महाकाव्य के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। इनमें वाल्मीकि कृत रामायण आदिकाव्य है। महाभारत वेदव्यास द्वारा लिखा गया एक ऐसा इतिहास ग्रंथ है जिसमें सभी संदर्भों के विषय का वर्णन प्राप्त होता है। साहित्य की इन दोनों विधाओं का उद्भव श्रौत कर्मकाण्ड के काल में ही हुआ था। रामायण तथा महाभारत के प्रचार-प्रसार में प्राचीन सूतों का महत्त्वपूर्ण योगदान था।

कूटशब्द : रामायण, महाभारत, वाल्मीकि, वेदव्यास, साहित्य, कर्मकाण्ड

प्रस्तावना

रामायण - मर्यादापुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित राम की कथा का सर्वप्रथम विवरण रामायण से ही मिलता है। यह काव्य का आदि रूप है जिसकी रचना महर्षि वाल्मीकि ने की थी। वाल्मीकि को भी आदिकवि कहा गया है। रामायण सात काण्डों में विभक्त है- बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड, उत्तरकाण्डा।यह संस्कृत वाङ्गमय में सम्प्राप्त रामकथाओं के अतिरिक्त संसार की अनेक रामकथाओं और अध्यात्म रामायण,अद्भुत रामायण, कम्बरामायण आदि रामविषयक काव्यों का मूल स्वीकार किया जाता है।

राजशेखर इतिहास के २ भेद करते हैं- परिक्रिया और पुराकल्प। परिक्रियात्मक इतिहास एक नायक से सम्बद्ध तथा पुराकल्पात्मक इतिहास अनेक नायकों से सम्बद्ध होता है।

इस प्रकार रामायण केवल एक नायक विषयक होने से परिक्रिया इतिहास स्वीकार किया जा सकता है।महाभारत में अनेक नायक विषयिणी कथाएँ होने से उसे पुराकल्प इतिहास माना जाना चाहिए।

महाभारत- महाभारत वेदव्यास द्वारा विरचित एक ऐसा इतिहास ग्रंथ है, जिसमें वैदिकयुगीन, रामायणकालीन व महाभारतकालीन घटनाओं का संदर्भ प्राप्त होता है, इसमें वैदिक उपाख्यानों व रामोपाख्यान का वर्णन इस तथ्य को स्वत: सिद्ध करता है। इस महाभारत की पृष्ठभूमि स्वयं भगवान् बादरायण व्यास ने तैयार की, वे महाभारत के साक्षी हैं। अथ से पूर्व तथा इति के पश्चात् स्थिर रहने वाले वेदव्यास ने इस इतिहास ग्रंथ की रचना तीन वर्षों में की-

त्रिभिर्वर्षै: सदोत्थायी कृष्णद्वैपायनो मुनि:।
महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमुत्तमम्।।

महाभारत की ऐतिहासिकता- महाभारत की ऐतिहासिकता को लेकर पाश्चात्य विचारकों में संशय रहा है। कुछ विद्वानों ने इसे दंतकथा सिद्ध करना चाहा, परंतु महाभारत में वर्णित घटनाक्रम गंभीर और बीभत्स होने के कारण सत्य के निकट प्रतीत होती है। रामायण में तीर्थ स्थल की शुरुआत बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग से ही हो जाती है। रामायण महाकाव्य में तीर्थ शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग में हुआ है-

सोऽभिषेकं तत: कृत्वा तीर्थे तस्मिन्यथा।।
विधि तमेव चिन्तयन्नर्थमुपावर्तत वै मुनि:।।[1]

तत्पश्चात् उन्होंने उत्तम तीर्थ में विधिपूर्वक स्नान किया और उसी विषय का विचार करते हुए वे आश्रम की और लौट पड़े। यहाँ उत्तम तीर्थ से तात्पर्य तमसा नदी और वाल्मीकि आश्रम के संदर्भ में है और इसके बाद तीर्थ स्थलों का उल्लेख तब आता है जब श्री राम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ चतुर्दश वर्ष का वनवास हेतु गमन करते है।

उनकी वनवास यात्रा में जिस नदी से सरयू अयोध्या नाव में बैठकर प्रस्थान करते है, नगर को शृंगेशवर जाते है, आश्रमों में विश्राम करते है, इस प्रकार के विभिन्न स्थलों को तीर्थ की श्रेणी में रखा गया क्योंकि ये सभी स्थल श्री राम के, सीता जी के, लक्ष्मण जी के जो देवांश रूप में धरती पर अवतरित हुए पावन चरणों से उनके निवास से उनकी कर्म स्थली बनने से अथवा अन्य किसी न किसी कारण से कार्यरूप में प्रभावित हुए और वे पवित्र हो गए।

श्री राम, सीता एवं लक्ष्मण जब अयोध्या से वनवास के लिए गए तो विभिन्न मार्गों से होते हुए एक विशाल वन पार करके उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ गंगा-यमुना का संगम है। शायद यह प्रयाग वन रहा होगा, जिसकी चर्चा कई पुराणों में की गई है। वे सायंकाल संगम के निकट पहुँचे और लक्ष्मण से कहा- देखो प्रयाग के पास भगवान अग्निदेव की ध्वजा की तरह उत्तम धूम उठ रहा है। मालूम होता है मुनिवर भरद्वाज यहीं पर है। निश्चय ही हम गंगा-यमुना के संगम के निकट पहुँच गए है, क्योंकि दो नदियों के जल के परस्पर टकराने से जो शब्द प्रकट होता है,वह सुनाई दे रहा है।

वन में उत्पन्न हुए फल-मूल और काष्ठ आदि से जीविका चलाने वाले लोगों ने जो लकड़ियाँ काटी हैं, वे दिखाई पड़ रही है। आश्रम के समीप विविध प्रकार के वृक्ष भी दृष्टिगोचर हो रहे हैं। कुछ ही देर में सीता सहित दोनों भाई आश्रम में पहुँचे और दूर से ही देखा कि मुनिवर भरद्वाज शिष्यों से घिरे हुए है। वे उनके समीप गए तथा प्रणाम किया। तत्पश्चात् श्री राम ने अपना परिचय दिया। सब जानने के बाद भरद्वाज जी ने श्री राम के सत्कार में एक गौ तथा जल का अघ्र्य समर्पित किया। उन्होंने नाना प्रकार के फल, अन्न एवं कंदमूलफल प्रदान किया और निवास की व्यवस्था की। रात्रि में मुनिवर भरद्वाज के साथ श्री राम का वार्तालाप हुआ। मुनिवर ने कहा- हे राम! गंगा-यमुना के संगम के पास का यह स्थान बड़ा पवित्र और एकांत वाला है। यहाँ की प्राकृतिक छटा मनोरम है। आप यहीं सुखपूर्वक निवास करें-

अवकाशो विविक्तोऽयं महानद्यो: समागमे।
पुण्यश्च रमणीयश्च वसत्विह भवान्सुखम्।।[2]

इस पर श्री राम ने कहा- मुनिवर। यह स्थल मेरे नगर, अर्थात्- अयोध्या के निकट है। यहाँ के निवासी मुझसे मिलने और सीता को देखने आते रहेंगे, इस कारण मेरा यहाँ निवास करना उचित नहीं होगा। तब मुनिवर भरद्वाज ने चित्रकूट का मार्ग बताया। यहीं पर महर्षि भरद्वाज ने श्री राम को चित्रकूट की भी महत्ता बताई कि चित्रकूट के शिखरों का दर्शन करने से कल्याणकारी पुण्यकर्मों का फल प्राप्त होता है और कभी पाप में मन नहीं लगता।

यावत् चित्रकूटस्य नर: शृङ्गाण्यवेक्षते।
कल्याणानि समाधत्ते न पापे कुरुते मन:।।[3]

इसके पश्चात् श्री महर्षि भरद्वाज के पास बैठकर श्री राम प्रयाग में तरह-तरह की बातें करते रहे और रात्रि हो जाने पर महर्षि ने उन्हें विश्राम करने को कहा-

तस्य प्रयागे रामस्य तं महर्षिमुपेयुष:।
प्रपन्ना रजनी पुण्या चित्रा: कथयत: कथा:।।[4]

प्रात: काल जब श्री राम चित्रकूट जाने की तैयारी करने लगे तो महर्षि भरद्वाज ने उन्हें बताया-'यहाँ से आगे जाने पर आपको एक बरगद का पेड़ मिलेगा जिसे श्यामवट कहते हैं। इसके नीचे बहुत से सिद्ध पुरुष निवास करते हैं। वहाँ पहुंचकर सीता जी उस वृक्ष से कुछ याचना करें। आवश्यकता हो तो आप लोग कुछ समय निवास भी करें। यह श्यामवट आज का अक्षय वट है। यह उस समय यमुना के उस पार रहा होगा और धारा-परिवर्तन के पश्चात् इस पार आ गया होगा, क्योंकि भरद्वाज जी ने यमुनापार के इस वृक्ष का वर्णन किया है। आज की भौगोलिक स्थिति और गंगा-यमुना की धारा के समय-समय पर दिशा बदलने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उस समय यमुना यहीं होगी, क्योंकि वर्तमान भरद्वाज आश्रम के पास की भूमि का ढाल यहाँ की स्थिति का वर्णन कर देता है। श्री राम की खोज में निकले उनके छोटे भाई भरत भी प्रयाग स्थित महर्षि भारद्वाज के आश्रम आए थे, जिसका विस्तृत वर्णन वाल्मीकीय रामायण में है। रामायण के सात काण्डों के सभी काण्डों में तीर्थ स्थलों का वर्णन किया गया है। मुख्य रूप से अयोध्या एवं युद्ध काण्ड में वर्णन किया गया है।

महाभारत - रामायण के अनंतर महाभारत का स्थान है। विश्व साहित्य में सबसे बड़ा ग्रंथ महाभारत ही है। जिसमें १ लाख से कुछ अधिक श्लोक है। यह भारत के सांस्कृतिक विषयों का विराट कोश तथा आचार की संहिता है। महाभारत का जो बृहत संस्करण विकसित हुआ है उसके संपादक या लेखक ने अपने युग के समस्त उल्लेखनीय विषयों को इसमें समाविष्ट करने का अप्रतिम प्रयास किया है। इसलिए कहा गया है-

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।[5]

महाभारत के १८ पर्वों में आदि पर्व, शल्य पर्व, वनपर्व आदि में तीर्थ स्थलों का वर्णन प्राप्त होता है।

महाभारत में तीर्थ स्थल

रन्तुक यक्ष – महाभारत के अनुसार कुरुक्षेत्र की पावन भूमि सरस्वती एवं दृषद्वती के मध्य स्थित है। रन्तुक यक्ष को समर्पित यह तीर्थ कुरुक्षेत्र के पिपली नामक स्थान पर सरस्वती के किनारे स्थित है। इनके बीच की भूमि कुरुक्षेत्र, रामन्तपंचक तथा ब्रह्मा की उत्तर वेदी कहलाती है।

तरन्तुकारन्तुकयोर्यदन्तरं रामह्रदानां च मचक्रुकस्य च।
एतत्कुरुक्षेत्रसमन्तपञ्चकं पितामहस्योत्तरवेदिरुच्यते ।।[6]

शालिहोत्र तीर्थ- इस तीर्थ का नाम शालिहोत्र मुनि से संबंधित होने के कारण शालिहोत्र पड़ा। इसी स्थान पर धर्मयक्ष ने सारस पक्षी का रूप धारण करके धर्मराज युधिष्ठिर से कई प्रश्न किए थे। महाभारत के दाक्षिणात्य पाठ के आदि पर्व में शालिहोत्र मुनि का वर्णन है। इन्होंने अपने आश्रम में अपने तपोबल से एक दिव्य सरोवर और पवित्र वृक्ष का निर्माण किया। शालिहोत्र के शालिसूर्य नामक तीर्थ में स्नान करने पर मनुष्य को सहस्त्र गऊओं के दान का फल मिलता है।

शालिहोत्रस्य तीर्थे च शालिसूर्ये यथाविधि।
स्नातवा नरवरश्रेष्ठ गोसहस्त्रफलं लभेत्।।[7]

ब्रह्मयोनि- ब्रह्मयोनि नामक यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से लगभग २८ की. मी. की दूरी पर सरस्वती नदी के तट पर पीहोवा में स्थित है। कुरुक्षेत्र के तीर्थों में से अधिकांश का सम्बन्ध त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश से रहा है। ब्रह्मा से संबंधित तीर्थों में ब्रह्मसर, ब्रह्मस्थान, ब्रह्मोदुम्बर, ब्रह्मातीर्थ एवं ब्रह्मयोनि प्रमुख हैं। इस तीर्थ का नाम एवं महत्त्व महाभारत में उपलब्ध होता है।

ब्रह्मयोनिं समासाद्य शुचि: प्रयतमानस:।
तत्र स्नातवा नरव्याघ्र ब्रह्मलोकं प्रपद्यते।।[8]

पुनात्या सप्तमं चैव कुलं नास्त्यत्र संशय:।
ततो गच्छेत राजेन्द्र तीर्थे त्रैलोक्यविश्रुतम्।।[9]

अर्थात् शुद्ध, संयमित एवं पवित्र चित्त से ब्रह्मयोनि तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है तथा नि: संदेह अपने कुल को उद्धार करता है। महाभारत वन पर्व में इस तीर्थ का उल्लेख विश्वामित्र तीर्थ के पश्चात् मिलता है।

रेणुका तीर्थ- इस तीर्थ के नाम एवं महत्त्व संबंधित पर्याप्त विवरण महाभारत एवं पौराणिक साहित्य में मिलते है। जहाँ स्नान कर पितरों एवं देवताओं की अर्चना करने

वाला मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है। वह रेणुका नामक उत्तम तीर्थ से जाना जाता है।

ततो गच्छेत राजेन्द्र रेणुकातीर्थमुत्तमम्।।[10]

तीर्थाभिषेकं कुवीत पितृदेवार्चने रत:।
सर्वपापविशुद्धात्मा अग्निष्टोमफलं लभेत्।।[11]

ब्रह्म तीर्थ- ब्रह्म नामक स्थान यह तीर्थ कुरुक्षेत्र के तीर्थों में अपना प्रमुख स्थान रखता है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत के वनपर्व में किया गया है। ब्रह्मस्थान नामक इस तीर्थ का स्पष्ट उल्लेख एवं महत्त्व वनपर्व के ८४ वें अध्याय में वर्णित है।

ततो गच्छेत राजेन्द्र ब्रह्मस्थानमनुत्तमम्।
तत्राभिगम्य राजेन्द्र ब्रह्माणं पुरुषर्षभ।।[12]

राजसूयाश्वमेधाभ्यां फलं विन्दति मानव:।
ततो राजगृहं गच्छेत् तीर्थसेवी नराधिप।।[13]

मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ तीर्थ ब्रह्मस्थान को जानना चाहिए जो कि ब्रह्मा से संबंधित है। वहाँ जाने पर मनुष्य राजसूय एवं अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त करता है। इसी तीर्थ के महत्त्व को पुष्ट करता वनपर्व के ८५ वें अध्याय का निम्न श्लोक हैं-

वरदासंगमे स्नातवा गोसहस्त्रफलं लभेत्।
ब्रह्मस्थानं समासाद्य त्रिरात्रोपोषितो नर:।।[14]

अर्थात् ब्रह्मस्थान नामक तीर्थ में तीन रात्रि निवास करने वाला मनुष्य सहस्त्र गऊओं के दान का फल प्राप्त करता है तथा स्वर्ग को जाता है।
देवी तीर्थ- यह तीर्थ कैथल से लगभग २ कि. मी. दूर करनाल मार्ग पर गाँव देवीगढ़ की सीमा पर स्थित है। महाभारत में इस तीर्थ का नाम एवं महत्त्व इस प्रकार वर्णित है-

कलश्यां वार्युपस्पृश्य श्रद्दधानो जितेन्द्रिय:।
अग्निष्टोमस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोति मानव:।।[15]

श्रद्धावान् एवं जितेंद्रिय मनुष्य कलशी तीर्थ का सेवन करके अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त करता है।

सरकतीर्थ- महाभारत के अनुसार इस तीर्थ में तीन करोड़ तीर्थ विद्यमान हैं। लोक प्रसिद्ध सरक नामक तीर्थ में जानना चाहिए जहाँ कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को वृषध्वज का दर्शन करके व्यक्ति की सभी कामनाएँ पूर्ण होती है एवं वह स्वर्गलोक को जाता है। वामन पुराण में भी इस तीर्थ संबंधी वर्णन महाभारत में दिए गए वर्णन से बहुत अधिक साम्य रखता है।

ततो गच्छेत् राजेन्द्र सरकं लोकविश्रुतम्।
कृष्णपक्षे चतुर्दश्यामभिगम्य वृषध्वजम्।।[16]

लभेत् सर्वकामान् हि स्वर्गलोकं च गच्छति।
तिस्त्र: कोट्यस्तु तीर्थानां सरके कुरुनन्दन।।[17]

वामन तीर्थ- सौंगल स्थित इस तीर्थ के नाम एवं महत्त्व का महाभारत में स्पष्ट उल्लेख मिलता है। तीनों लोकों में विख्यात वामन नामक तीर्थ में जानना चाहिए। वहाँ विष्णुपद में स्नान कर तथा वामन भगवान की पूजा करने वाला मनुष्य सभी पापों से मुक्त होकर विष्णुलोक को प्राप्त करता है।

ततो वामनकं गच्छेत् त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
तत्र विष्णुपदे स्नातवा अर्चयित्वा च वामनम्।[18]

सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति।
कुलम्पुने नर: स्नातवा पुनाति स्वकुलं तत:।।[19]

श्री तीर्थ- यह तीर्थ कैथल से लगभग १८ कि. मी. दूर कैथल जींद मार्ग पर कसान नामक ग्राम में स्थित है। इस तीर्थ के नाम से ही प्रतीत होता है कि यह तीर्थ मनुष्य को श्री लक्ष्मी, वैभव, ऐश्वर्य, धन- संपदा प्रदान करने वाला है। इस तीर्थ का वर्णन महाभारत में मिलता है। श्री तीर्थ में पहुँच कर एवं इस तीर्थ में संयमी हृदय से स्नान करके देवताओं एवं पितरों की अर्चना करने वाला मनुष्य अतुल श्री एवं वैभव को प्राप्त करता है।

श्रीतीर्थे च समासाद्य स्नातवा नियतमानस:।
अर्चयित्वा पितृन् देवान् विन्दते श्रियमुत्तमाम्।[20]

पुण्डरीक तीर्थ- यह तीर्थ कैथल से १५ कि. मी. की दूरी पर पुण्डरी नामक शहर में स्थित है। पुण्डरीक तीर्थ का वर्णन महाभारत में मिलता है। महाभारत के अनुसार इस तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य पुण्डरीक यज्ञ के फल को प्राप्त करता है। इस तीर्थ का सेवन शुक्ल पक्ष की दशमी को करना चाहिए।

शुक्लपक्षे दशम्यां च पुण्डरीकं समाविशेत्।
तत्र स्नातवा नरो राजन् पुण्डरीकफलं लभेत्।।[21]

देवी तीर्थ- महाभारत के वनपर्व में कहा गया है जो मनुष्य पवित्र हृदय से मधुवटी के देवी तीर्थ में जाकर वहाँ स्नान करके देवताओं एवं पितरों की पूजा अर्चना करता है, देवी की कृपा से उसे सहस्त्र गऊओं के दान का पुण्य फल प्राप्त होता है।

तत्र स्नात्वार्चयित्वा च पितृन् देवांश्च पूरुष:।।
स देव्या समनुज्ञातो गोसहस्त्रफलं लभेत्।[22]

कौशिक्या: संगमे यस्तु दृषद्वत्यांश्च भारत।
स्नाति वै नियताहार: सर्वपापै: प्रमुच्यते।[23]

त्रिविष्टप तीर्थ- महाभारत काल में विष्णु एवं शिव दोनों एक समान माने जाते थे। महाभारत तथा पौराणिक साहित्य में वर्णित अनेक तीर्थ इन दोनों देवताओं से संबंधित है। शिव से संबंधित सतत्, पंचनद, सरक, अनरक, स्थानेश्वर आदि तीर्थों में त्रिविष्टिप तीर्थ का अपना विशेष महत्त्व है। महाभारत में इस तीर्थ का वर्णन पुण्डरीक तीर्थ के बाद किया गया है। इसमें वैतरणी नदी का भी उल्लेख है। वैतरणी नदी कुरुक्षेत्र की नौ नदियों सरस्वती, दृषद्वती, गंगा, मंदाकिनी आदि प्रमुख नदियों में से एक है। तत्पश्चात् तीनों लोकों में विख्यात त्रिविष्टप नामक तीर्थ में जाना चाहिए। जहाँ सर्प पाप नाशक वैतरणी नदी है। इस पवित्र नदी में स्नान करके एवं भगवान शंकर की अर्चना करने से सभी पापों से मुक्त हुआ व्यक्ति परमगति को प्राप्त करता है।

ततस्त्रिविष्टपं गच्छेत् त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
तत्र वैतरणी पुण्या नदी पापप्रणाशिनी।।[24]

तत्र स्नात्वार्चयित्वा च शूलपाणिं वृषध्वजम्।
सर्वपापविशुद्धात्मा गच्छेत परमां गतिम्।।[25]

पवनह्रद तीर्थ- इस तीर्थ का वर्णन महाभारत, पद्म पुराण, वामन पुराण में मिलता है। जहाँ महाभारत में पवन देवता से संबंधित बताया गया है, वहीं वामन पुराण में इसका संबंध महादेव एवं पवन देवता से स्थापित करता है जब कि पद्म पुराण में इसका

संबंध महर्षि दधीचि से जोड़ा गया है। इस पवनह्रद नामक तीर्थ में स्नान करने वाला व्यक्ति विष्णुलोक में पूजित एवं सम्मानित होता है।

सर्वपापविशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति।
कुलम्पुने नर: स्नातवा पुनाति स्वकुलं तत:।।[26]

पवनस्य ह्रदे स्नात्वा मरुतां तीर्थमुत्तमम्।
तत्र स्नात्वा नरव्याघ्र विष्णुलोके महीयते।।[27]

नैमिष- महाभारत के आदिपर्व में यह उल्लेख है कि नैमिषारण्य में ऋषियों की प्रेरणा से सौति ने महाभारत की सम्पूर्ण कथा सुनाई थी। महाभारत काल में इस का महत्त्व इतना अधिक था कि पृथ्वी के समस्त तीर्थों को यहाँ विद्यमान समझा जाता था। महाभारत वन पर्व में नैमिष कुंज नामक एक प्राचीन तीर्थ का वर्णन है। नैमिषारण्य के निवासी ऋषियाँ ने अपनी तीर्थयात्रा के दौरान कुरुक्षेत्र आने पर सरस्वती के तट पर एक कुंज का निर्माण किया जो उन सब के लिए आह्लादकारी एवं मनोहारी विश्राम स्थली था।
महाभारत वन पर्व के ८४ वें अध्याय में नैमिष तीर्थ के महत्त्व का बड़ा ही विस्तारपूर्वक वर्णन है जिसके अनुसार नैमिष तीर्थ सिद्धि के द्वारा सेवित एवं पुण्यमयी तीर्थ है जहाँ देवताओं के साथ ब्रह्मा नित्य निवास करते हैं। नैमिष में प्रवेश करने वाले मनुष्य के आधे पाप उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं तथा मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। इस तीर्थ में उपवासपूर्वक प्राण त्यागने वाला व्यक्ति समस्त पुण्यलोको में आनंद का अनुभव करता है। नैमिष तीर्थ नित्य पवित्र और पुण्यजनक है।

ततो नैमिषकुञ्जं च समासाद्य कुरुद्वह।
ऋषय: किल राजेन्द्र नैमिषेयास्तपखिन:।।[28]

तीर्थयात्रां पुरस्कृत्य कुरुक्षेत्रं गता: पुरा।
तत: कुञ्ज: सरस्वत्या: कृतो भरतसत्तम।।[29]

श्री कुंज- यह तीर्थ कैथल से लगभग २० कि. मी. दूर कैथल-पीहोवा मार्ग पर बानपुरा में स्थित है। बानपुरा में स्थित इस तीर्थ का वर्णन महाभारत एवं वामन पुराण दोनों में ही उपलब्ध होता है। महाभारत में इस तीर्थ को सरस्वती के तट पर स्थित बताया गया है। महाभारत में इस तीर्थ के महत्त्व के विषय में लिखा है कि यहाँ स्नान करने पर मनुष्य को अग्निष्टोम यज्ञ का फल मिलता है।

श्रीकुञ्जं च सरस्वत्यास्तीर्थे भरतसत्तम्।
तत्र स्नात्वा नरश्रेष्ठ अग्निष्टोमफलं लभेत्।।[30]

सु तीर्थ - सुतीर्थ में जाना चाहिए जहाँ नित्य पितर एवं देवताओं का सान्निध्य रहता है। वहाँ जाकर पितरों एवं देवताओं की अर्चना एवं अभिषेक करना चाहिए। ऐसा करने वालों मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है एवं वह पितृ लोक को प्राप्त करता है। तीर्थ सरोवर पर प्राचीन ईंटों से निर्मित एक घाट है जिसके निकट दो प्राचीन मंदिर है जिनका नवीनीकरण किया गया है।

ब्रह्मावर्ते नर: स्नात्वा ब्रह्मलोकमवाप्नुयात्।
ततो गच्छेत् राजेन्द्र सुतीर्थकमनुत्तमम्।।[31]

तत्र संनिहिता नित्यं पितरो दैवतै: सह ।
तत्राभिषेकं कुर्वीत पितृदेवार्चने रत:।।[32]

अरन्तुक यक्ष तीर्थ - अरन्तुक यक्ष को समर्पित यह तीर्थ कैथल से लगभग २६ की. मी. दूर कैथल- पटियाला जिलों की सीमा पर बेहरजख ग्राम के पश्चिम में स्थित है। तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद तथा मचक्रुक के मध्य का भू-भाग ही कुरुक्षेत्र अथवा समन्तपंचक है, जिसे ब्रह्मा जी कि उत्तर वेदी भी कहते है।

तरन्तुकारन्तुकयोर्यदन्तरं रामह्रदानां च मचक्रुकस्य च।
एतत्कुरुक्षेत्रसमन्तपञ्चकं पितामहस्योत्तरवेदिरुच्यते।।[33]

शृंगी तीर्थ - शृंगी ऋषि/ शंखिनी देवी तीर्थ नामक यह तीर्थ कैथल से लगभग २२ कि. मी दूर कैथल- टोहाना मार्ग पर सांघन ग्राम में स्थित है। महाभारत में कुरुक्षेत्र भूमि के तीन तीर्थों को मातृशक्ति की प्रतीक देवी से संबंधित बताया गया है जिनमें से एक यह शंखिनी देवी नामक तीर्थ है।

शङ्खिनीतीर्थमासाद्य तीर्थसेवी कुरूद्वह।
देव्यास्तीर्थे नर: स्नात्वा लभते रूपमुत्तमम्।।[34]

अर्थात् है कौरव श्रेष्ठ! तीर्थ परायण मनुष्य को शंखिनी तीर्थ में जाना चाहिए। देवी के उस तीर्थ में स्नान करने पर मनुष्य उत्तम रूप को प्राप्त करता है। ब्रह्म पुराण में भी सर्व तीर्थ माहात्म्य नामक अध्याय में इस तीर्थ का स्पष्ट नामोल्लेख उपलब्ध होता है।

गोभवन तीर्थ - गुहणा में स्थित इस तीर्थ का वर्णन महाभारत तथा पद्म पुराण दोनों में किञ्चित शब्द परिवर्तन के साथ मिलता है। महाभारत तथा पद्मपुराण में यह तीर्थ गवां भवन के नाम से उल्लिखित है। संभवत: महाभारत एवं पद्म पुराण में गवां भवन नाम से वर्णित तीर्थ ही वर्तमान में अपभ्रंश होकर गोभवन के नाम से विख्यात हो गया होगा। तीर्थ सेवी मनुष्य को चाहिए कि वह गवांभवन तीर्थ में जाए। वहाँ पर स्नान करने वाले मनुष्य को गोसहस्त्र दान का फल प्राप्त होता है।

गवां भवनमासाद्य तीर्थसेवी यथाक्रमम्।
तत्राभिषेकं कुर्वाणो गोसहस्त्रफलं लभेत्।।[35]

मानुष तीर्थ - कुरुक्षेत्र भूमि में स्थित इस तीर्थ की प्राचीनता ऋग्वेद में इसका वर्णन मिलने से स्वत: सिद्ध हो जाती है। वैदिक काल में ऋषियों ने इसी पवित्र तीर्थ पर अग्नि को स्थापित किया था। यह वर्णन ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के १२८ वें सूक्त के सातवें श्लोक में मिलता है।

ततो गच्छेत राजेन्द्र मानुषं लोकविश्रुतम्।
यत्र कृष्णमृगा राजन् व्याधेन शरपीडिता:।।[36]

विगाह्य तस्मिन् सरसि मानुषत्वमुपागता:।
तस्मिन्तीर्थे नर: स्नात्वा ब्रह्मचारी समाहित:।।[37]

सर्वपापविशुद्धात्मा स्वर्गलोके महीयते।
मानुषस्य तु पूर्वेण क्रोशमात्रे महीपते।।[38]

इस श्लोक से स्पष्ट है कि इस सरोवर में स्नान करने से व्याघ्र के बाण से आहत मृग चूंकि मानुष शरीर पा गए थे, इसी से इस तीर्थ का नाम मानुष तीर्थ हुआ।

उपसंहार

रामायण एवं महाभारत आर्ष काव्य कहलाते है। जो भारतीय सनातन संस्कृति को अंगीकार करते है और जनसमूह तीर्थयात्रा कर अपने पुण्यों का संचय करते है। यह तीर्थ हमारी भक्तिभावपूर्ण व श्रद्धापूर्ण संस्कृति के अनादिकाल से वैभवशाली केंद्र रहें है। महाभारत से पूर्व रामायण के विषय में बताया जाता है। इसी प्रकार रामायण का परिचय देने के पश्चात् रामायण में बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड आदि में तीर्थ स्थलों का वर्णन किया गया है। तत्पश्चात् महाभारत में आदि पर्व, वनपर्व आदि में अनेक तीर्थ स्थलों को प्रतिपादित किया गया। ऋग्वेद,पुराण आदि में भी तीर्थस्थलों का उद्धरण प्रस्तुत किया गया।

संदर्भ

1. महाभारत, महाकाव्य, व्यास, पुणे चित्रशाला प्रेस-१९२९
2. वाल्मीकि रामायण, महाकाव्य, गीताप्रेस गोरखपुर, १९७७
3. वाल्मीकि रामायण, राधाकृष्ण, धानुकाप्रकाशन संस्था- २०१२
4. वाल्मीकि रामायण, जानकीनाथ शर्मा, गीता प्रेस गोरखपुर, सं० २०१२
5. वाल्मीकि रामायण समाज का मार्ग दर्शन, रजत जोशी, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, सं०- २०१२
6. संक्षिप्त महाभारत प्रथम खण्ड एवं द्वितीय खण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, २०१३
7. सुखमय भट्टाचार्य, महाभारतकालीन समाज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद- १९६६
8. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, प्रथम भाग बालकाण्ड एवं किष्किन्धाकाण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर, २०५४ वि. सं।
9. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, द्वितीय भाग सुन्दर काण्ड एवं उत्तरकाण्ड, गीताप्रेस, गोरखपुर, २०५४ वि. सं।
10. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, (पं०) शिवराम शर्मा वशिष्ठ, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, १९९२
11. रामायण,बालकाण्ड,२.२० श्लोक
12. रामायण, अयोध्याकाण्ड, ५४.२२ श्लोक
13. रामायण, अयोध्याकाण्ड, ५४.३० श्लोक
14. रामायण,अयोध्याकाण्ड, ५४.३५ श्लोक
15. महाभारत, आदिपर्व, ६२.५३ श्लोक
16. महाभारत, वनपर्व, ८३.२०८ श्लोक
17. महाभारत, वनपर्व, ८३.१०७ श्लोक
18. महाभारत,वनपर्व,८३.१४० श्लोक
19. महाभारत, वनपर्व, ८३.१४१ श्लोक
20. महाभारत, वनपर्व, ८३.१५९ श्लोक
21. महाभारत, वनपर्व, ८३.१६० श्लोक
22. महाभारत, वनपर्व, ८४. १०३ श्लोक
23. महाभारत, वनपर्व, ८४. १०४ श्लोक
24. महाभारत, वनपर्व, ८५. ३५ श्लोक
25. महाभारत, वनपर्व, ८३. ८० श्लोक
26. महाभारत, वनपर्व, ८३. ७५ श्लोक
27. महाभारत, वनपर्व, ८३. ७६ श्लोक
28. महाभारत, वनपर्व, ८३. १०३ श्लोक
29. महाभारत, वनपर्व, ८३. १०४ श्लोक
30. महाभारत, वनपर्व, ८३. ४६ श्लोक
31. महाभारत, वनपर्व, ८३. ८३ श्लोक
32. महाभारत, वनपर्व, ८३. ९४ श्लोक
33. महाभारत, वनपर्व, ८३. ९५ श्लोक
34. महाभारत, वनपर्व, ८३. ८४ श्लोक
35. महाभारत, वनपर्व, ८३. ८५ श्लोक
36. महाभारत, वनपर्व, ८३. १०४ श्लोक
37. महाभारत, वनपर्व, ८३. १०५ श्लोक
38. महाभारत, वनपर्व, ८३. १०९ श्लोक
39. महाभारत, वनपर्व, ८३. ११० श्लोक
40. महाभारत, वनपर्व, ८३. १०८ श्लोक
41. महाभारत, वनपर्व, ८३. ५४ श्लोक
42. महाभारत, वनपर्व, ८३. ५५ श्लोक
43. महाभारत, वनपर्व, ८३. २०८ श्लोक
44. महाभारत, वनपर्व, ८३. ५१ श्लोक
45. महाभारत, वनपर्व, ८३. ५० श्लोक
46. महाभारत, वनपर्व, ८३. ६५ श्लोक
47. महाभारत, वनपर्व, ८३. ६६ श्लोक
48. महाभारत, वनपर्व, ८३. ६७ श्लोक